अध्याहार

सामान्यतः अपूर्ण वाक्य को पूर्ण करने और उसकी रचना को सुगठित करने के लिए शब्द या पद हटाने की क्रिया को अध्याहार कहते हैं। इससे वाक्य संक्षिप्त और मुहावरेदार होता है मुहावरों और लोकोक्तियों में कभी कर्ता पद का लोप और प्रायः क्रिया पद का लोप होता है। लोप के बावजूद वाक्य आधा होने के बाद अर्थ की दृष्टि से समझ में आ जाता है। कुछ उदाहरण देखिए–

1. नाच न जाने आँगन टेढ़ा–कर्ता और क्रिया (है) का लोप।
2. ईश्वर की माया, कहीं धूप–कहीं छाया (और) (है) का लोप।
3. चोर की दाढ़ी में तिना–। (होता है)
4. जैसा अन्न, वैसा मन....। (होता है)
5. बुद्धिमान को इशारा काफी... (होता है)

समाचार पत्रों के शीर्षकों में अध्याहार–

समाचार पत्रों जगह की कमी के कारण समाचारों और लेखों के शीर्षकों में पूरे वाक्य का प्रयोग नहीं किया जाता। इन शीर्षकों में कभी 'कर्ता' या संबोधन का प्रयोग नहीं होता और कभी क्रिया और सहायक क्रिया का प्रयोग नहीं होता। देखने में और पढ़ने में वाक्य आधा प्रतीत होता है, फिर भी अर्थ समझ में आ जाता है। कुछ उदाहरण देखिए–

1. ''बन जाइए, पालन-पोषण में पारंगत। 'आप' का लोप
2. टेढ़े लोगों को कैसे जीतें। 'आप' या 'हम' का लोप
3. आई ड्राप से मोतियाबिंद का इलाज। 'हो सकेगा' का लोप
4. नेपाल को बसाने की योजना अधर में। 'लटकी' क्रिया का लोप
5. स्कूलों में नर्सरी दाखिले की प्रक्रिया शुरू। 'होगी' क्रिया का लोप

रेडियो/टेलीविज़न समचारों के शीर्षकों में अध्याहार

रेडियो और टेलीविज़न के समाचार बुलेटिन में Time slot का ध्यान रखकर न्यूज़ बुलेटिन तैयार किए जाते हैं। दस मिनट में सौ खबरें, फटाफट न्यूज में अगर पूरे वाक्य में खबर बोली जाएगी तो समय अधिक लगेगा। इसलिए न्यूज में अध्याहार का प्रयोग करके खबरें संक्षिप्त की जाती हैं। उदाहरण देखिए–

1. छत्तीसगढ़ में कुपोषण दर 30 प्रतिशत।
2. 'गणतंत्र दिवस में फ्रांस के राष्ट्रपति मुख्य अतिथि' सहायक क्रिया का लोप
3. 'पूर्व माकपा सांसद नुरुल हुदा का निधन'–'हुआ' का लोप
4. 'वर्ष 2015 के साहित्य अकादमी पुरस्कारों की घोषणा'।–'की गई' का लोप

नाटकों, धारावाहिकों और फिल्मों के लिए संवादों में अध्याहार

बोलते समय, लिखते समय अध्याहार का प्रयोग सर्वाधिक किया जाता है। छोटे-छोटे प्रश्न सूचक या उत्तर सूचक वाक्यों में अध्याहार का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण देखिए–

रमेश–आप कहाँ से आ रहे हैं?
विजय–दिल्ली से
रमेश–कहाँ उतरेंगे?
विजय–पठानकोट
रमेश–यह गाड़ी पठानकोट से होकर जाएगी
विजय–हाँ।
रमेश–कितने बजे पठानकोट पहुँचेगी?
विजय–लगभग पाँच बजे।

यहाँ ध्यान देने की बात है–रमेश के प्रश्नों के उत्तर देते समय पूरे वाक्य में उत्तर नहीं दिया है, केवल एक या दो शब्दों में उत्तर दिया है फिर भी रमेश ने विजय के मंतव्य को समझ लिया है। यदि पूरे वाक्य का उत्तर देते समय प्रयोग किया जाता तो नाटक/फिल्म की कथा के प्रवाह में कमी आ जाती। इसलिए कहानी की रवानगी को बनाए रखने के लिए अध्याहार किया गया है। वार्तालाप को सहज स्वाभाविक बनाने के लिए इस प्रकार अध्याहार करना जरूरी हो जाता है। व्याकरणिक संरचना के धरातल पर भी कई बार अध्याहार का प्रयोग किया जाता है।

1. **कर्ता का अध्याहार**–पहले वाक्य में कर्ता का प्रयोग करके दूसरे वाक्य में कर्ता का अध्याहार कर दिया जाता है। जैसे–हम लोग कभी ब्राह्मण परिवार में अपनी बेटी की शादी नहीं करेंगे, और ( ) न कभी गैर बिरादरी में ( ) की शादी करेंगे।
2. यदि अनेक विशेषणों का एक ही विशेषय हो और उससे एक वचन

Scanned with CamScanner

का बोध हो, तो उसका एक ही बार उल्लेख होता है। जैसे–गोल, गोरा चमकदार और सुंदर चेहरा।

3. जब अनेक कर्ताओं की एक ही क्रिया रहती हो तो क्रिया को बार-बार न लिखकर अंत में लिख दिया जाता है। जैसे–सफाई से रहने पर मन प्रसन्न, शरीर स्वस्थ और घर में सदा सुख चैन रहता है।

4. यदि प्रथम उपवाक्य में कर्ता आए तो शेष उपवाक्यों में उसकी आवश्यकता नहीं रहती। जैसे–रमेश ने खेती का काम छोड़ दिया और स्कूल में नाम लिखाकर पढ़ाई शुरू कर दी।

5. तुलनात्मक वाक्य में उपमान के साथ तुलना करते हुए प्रायः सभी पद लुप्त हो जाते हैं। जैसे–रावण का शरीर बड़ा विशाल है, राक्षस की तरह।

Scanned with CamScanner